आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 25 रोहतक, 28 नवम्बर, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आत्मिक ज्ञान और पुण्य खरीदे नहीं जा सकते

❑ गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन'

जिन लोगों ने आत्मिक ज्ञान और पुण्य को बेचने की दुकानें खोली हुई हैं वास्तव में उनके पास आत्मिक ज्ञान व पुण्य अर्थात् वैदिक ज्ञान और परोपकारी जीवन का अनुभव है ही नहीं। केवल 'सादा जीवन उच्च विचार' वाले ज्ञानवान व पुण्यात्मा लोगों की बाह्य वेशभूषा ही शेष बची है जो उन्होंने अपना रखी है उसी को देखकर भोले-भाले लोग चढ़ावा दे देकर लुटते जा रहे हैं इसी दु:ख का अनुभव करने के कारण यह लेख प्रस्तुत है—

बहुत सारे लोग यह सोचकर भ्रमित रहते हैं कि जो सत्कार्य वे करते हैं उनका उन्हें कोई लाभ नहीं मिलता, पुण्य नहीं मिलता। दरअसल, निजी स्वार्थ के लिए किया गया कोई भी दान फलदायी नहीं होता। उदाहरण के लिए कुछ लोग यह सोचकर दान देते हैं कि पैसे फालतू पड़े हैं, काला धन है, इनकम टैक्स के झंझटों में कौन फँसे इससे तो अच्छा है भगवान् को चढ़ा दें। पुण्य ही मिलेगा, भगवान् खुश हो जायेंगे। अब इसमें स्पष्ट है कि वे एक बोझ से छुटकारा पाना चाहते हैं, इसमें लालच और चापलूसी का भी भाव है। ऐसे में दाता के मूल आंतरिक भाव के अनुसार नकारात्मक फल ही मिलेगा, पुण्य नहीं। पुण्य मिलता है करुणा में सहयोग, असहायों का सहयोग करने से और हृदय में सर्वकल्याण जैसे सच्चे सात्त्विक भावों से। पर ऐसे दान बहुत कम देखने में आते हैं। दान में इस बात का जरा भी महत्त्व नहीं है कि दान कितना महंगा है बल्कि दान में यह महत्त्वपूर्ण है कि दान कितनी सद्भावना, करुणा, प्रेम और परोपकार की भावना से सुपात्रा को दिया गया है या नहीं। ऐसे सद्भाव से दिया गया 10 रुपया भी उतना ही पुण्य देगा जितना 10 करोड़ का दान क्योंकि दोनों अवस्थाओं में आंतरिक भाव सात्त्विक थे और उतने ही गहरे थे। फल 10 रुपये या 10 करोड़ के अनुसार नहीं मिलेगा बल्कि फल भीतर के फूल आंतरिक भावों के अनुसार मिलेगा। हमारा अवचेतन मन ऐसे ही काम करता है। वह हमेशा मूलभूत सच्चाई का साथ देता है। ये तो हमारा

क्रमश: पृष्ठ 2 पर...

आत्मिक ज्ञान और पुण्य खरीदे.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

व्यवसायिक दिमाग हिसाब करता है कि 10 करोड़ दिए हैं तो ऊपर भगवान, आगे की सीट (वी.आई.पी.) तो दे ही देगा, थोड़ा खास ख्याल तो करेगा ही। अवचेतन मन में चापलूसी का भाव भी प्रबल है, बहती गंगा में हाथ धोने वाला भाव है। ऐसे भावों से क्या पुण्य मिलेगा? कभी नहीं।

तीर्थ यात्रा पर जाने वाले लोगों के मन में पुण्य संचय करने का भाव बड़ा तीव्र होता है और जितने भी तीर्थस्थल हैं प्राय: पानी के स्रोत के पास ही होते हैं और प्राकृतिक मनोहारी स्थल भी होते हैं और वहाँ पाये जाने वाले मन्दिरों में किसी न किसी तपस्वी महापुरुष या काल्पनिक देवी-देवताओं का इतिहास भी सुनने को मिलता है और इसी से लोग प्रसन्न हो जाते हैं कि हमें आशीर्वाद तो मिलेगा ही, लेकिन वे तीर्थ से संबंधित सच्चे इतिहास को नहीं जानते जो इस प्रकार है।

आजकल तीर्थ से अभिप्राय (अक्सर) ऐसे भौगोलिक स्थलों से लिया जाता है जहाँ विशिष्ट मन्दिर स्थापित हैं, जो पुराणों के अनुसार अवतारों के जन्म या लीला स्थल रहे हैं या उनके नाम से प्रसिद्ध हैं और ये विशिष्ट नदियों यथा गंगा, क्षिप्रा, गोदावरी आदि नदियों के आस-पास अवस्थित हैं। इसी के साथ यह धारणा भी प्रचलित है कि इन तीर्थों की यात्रा करने व इन पवित्र नदियों में स्नान करने से पाप दूर हो जायेंगे व पुण्य की प्राप्ति होगी साथ में ही साथ मोक्ष का सुख भी मिलेगा। यह मान्यता अवैदिक है तथा कर्मफल के सिद्धान्त के विरुद्ध होने से भी यह मान्य नहीं। क्योंकि पाप कभी, किसी भी स्थिति में क्षमा योग्य नहीं होता, उसका फल कभी न कभी मिलता अवश्य है। अत: तीर्थ यात्रा का केवल जीवन की नीरसता में कुछ नयापन आने से चित्त की प्रसन्नता होती है तथा जानकारियों में वृद्धि होती है नदियों में नहाने से शरीर की शुद्धि होती है इससे अधिक और कुछ नहीं। **ऋषियों की दृष्टि में तीर्थ वही है, जो दु:ख सागर से पार कर दे।** माता-पिता, आचार्य, विद्वान्, धार्मिक उपदेशक, वानप्रस्थी, संन्यासी जो हमें यथार्थ ज्ञान सहित सत्य मार्ग पर चलने की शिक्षा देते हैं, तीर्थ हैं। तपस्वी-ब्रह्मनिष्ठ, तीनों प्रकार की ऐषणाओं (पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा) का त्याग कर देने वाले, परोपकारी महात्मा हैं वे साक्षात् तीर्थ ही हैं। इनके सत्संग और तदनुकूल आचरण से दुखसागर से तरना सम्भव है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि—

''वेदादि सत्य शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्कर्म करना, ब्रह्मचर्य, आचार्य, अतिथि, माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञान-विज्ञान आदि शुभ गुण-कर्म दु:खों से तारने वाले होने से 'तीर्थ' हैं।''

प्राचीन काल में ब्राह्मण, वानप्रस्थी वैदिक विद्वान् संन्यासी लोगों के निवास स्थान शुद्ध और प्राकृतिक मनोहारी वातावरण जहाँ शुद्ध जल का स्रोत बहुत जरूरी था ऐसी जगह होते थे। वे खुद भी मूर्ति की पूजा नहीं करते थे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाण्ड पण्डित होते थे। इसलिए जन साधारण गृहस्थी लोग मार्गदर्शन के लिए उनके प्रवचनों के प्यासे रहते थे, ताकि सचमुच दु:खों से तरा जा सके इसी का नाम तीर्थयात्रा होता था। अब न वहाँ सच्चे तपस्वी रहे, न वेद का ज्ञान रहा। अब चढ़ावे के अलावा वहां कुछ शेष बचा नहीं इसलिए आजकल तीर्थ नामक स्थलों में बैठे **वेदज्ञान से कोरे पाखण्डियों के पास जाकर धन, समय और बुद्धि भ्रष्ट करने वाले कर्मों का कोई अच्छा फल मिलने वाला नहीं।** उपरोक्त कर्म करने से ईश्वर हमारे पाप कर्म सब भुला देगा। ऐसी धारणा रखकर मन में यही विचार लाता रहता है कि बस नाम ले लो ईश्वर का, किसी भी प्रकार से पूजा कर लो उसकी, देवी-देवता की खूब प्रशंसा करके उनको अपने पक्ष में बांध लो। नहीं तो कभी ऐसा न हो कि नाम न लेने से, उसकी तरफ न देखने से ईश्वर मेरा काम न बिगाड़ दे, धन्धा चौपट न कर दे, ढेर सारी समस्याएँ या बाधाएँ पैदा न कर दे।

सच्ची तीर्थ यात्रा एक झटका है, उत्तेजना है, जाग जाने का संदेश है, एक एवरेस्ट की सूचना है, परन्तु 99 प्रतिशत लोग तीर्थ यात्रा से लौटकर थोड़ी देर के लिए श्मशान घाट का वैराग लाकर फिर उसी बेहोशी वाले जीवन में लौट आते हैं। जैसे कोई गरमी के अन्दर ठण्डे पानी के छींटे मार आया परन्तु कुछ देर बाद फिर पसीने में लतपथ हो रहा है। तीर्थ यात्रा का अर्थ है, ऐसी गंगा में जाना जहाँ सदियों से संस्कार के रूप में पाले हुए अपने अहंकार, वासनाएँ, अनावश्यक महत्त्वाकांक्षाएं, स्वार्थ आदि सब विकार छोड़कर नए संकल्प के साथ विचारों को साफ कर उससे मुक्त होकर जाग कर, रूपान्तरित होकर, गृहस्थ जीवन को सुधार, इस संसार में कीचड़ में कमल के फूल की तरह खिलना और अपनी पवित्रता और सुन्दरता का लाभ संसार को देना बस यही तीर्थ का सच्चा फल है। तीर्थ यात्रा करके जागे ही नहीं, रूपान्तरित ही नहीं हुए, तो करते रहें, ऐसी हजारों तीर्थ यात्राएँ और देते रहें दिल को झूठी तसल्ली, जीते रहें भ्रम में। संसार में किसी को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। अब तो होश में आ ही जाओ और कर लो सच्ची तीर्थ यात्रा, कहीं दूर जाकर नहीं अपने भीतर (मन मन्दिर) में जाकर। बाहर की सभी तीर्थ यात्राएँ अज्ञानवश भीतर की तीर्थयात्रा से वंचित रहने का ठोस कारण है। अपने से और दूर जाने का सिलसिला है इसलिए सदियों से मानव झूठी तीर्थ यात्राएं करने के बाद भी वहीं का वहीं है। उसे सिर्फ यही मानसिक सन्तोष है कि उसने भले ही कितने ही पापकर्म किये हों, लेकिन भगवान् के दरबार में हाजिरी लगाकर या थोड़ा-बहुत दान देकर, मन्दिर बनाकर या मन्दिर-गुरुद्वारे में सेवा करके, माता के बड़े-बड़े जागरण कर और भण्डारे करके उसने ईश्वर को सूचित कर दिया है। अब ईश्वर इतना तो करेगा ही कि नरक से बचा लेगा। आदमी भीतर की तीर्थयात्रा से अनभिज्ञ रहता हुआ बाहर की तीर्थ यात्रओं को इतना महत्त्व देता है। ऐसा नहीं है कि बाहर की तीर्थ यात्राएँ गैर जरूरी हैं या महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। बाहर की तीर्थयात्राएं आध्यात्मिक जगत् में प्रवेश कराने में सहयोग कर सकती हैं अन्तिम मंजिल या उद्देश्य तो भीतर की गंगा में डूबना है, उस पार जाना है, स्वयं को तीर्थ स्थल बनाना है। तीर्थयात्रा करना नहीं है स्वयं तीर्थ स्थल में रूपान्तरित हो जाना है।

वरदान प्राप्ति की खुशी और अभिशाप मिलने का डर दोनों के चक्कर में फँसे हुए लोग यह सोचते हैं कि हमने यदि ईश्वर या किसी देवी-देवता के प्रति कोई कर्मकाण्ड नहीं किया तो हम उनके अभिशाप के भागीदार बन जायेंगे और हमने उसको खुश करने के लिए कुछ कर्मकाण्ड किया तो हमको कुछ उनसे वरदान तो मिलेगा ही। हो सकता है हमारे अमुक-अमुक दु:ख-दर्द जा हो रहे हैं, वे सब मिट जायें। पण्डे और पुजारियों ने पेट भरने के लिए आम आदमी को वरदान और अभिशाप की रस्सी से बांधा हुआ है।

हे भारतीयो! आर्यो! आर्यपुत्रो! पांच हजार वर्ष से सोने वाले आर्यपुत्रो! उठो! इतनी गहरी और चिरनिद्रा में तुम्हारा नाम तक बदल कर 'हिन्दू' रख दिया है। दुष्टों ने तुम्हारे पवित्र ज्ञान के स्रोत 'वेद' को तुमसे छीन लिया है और दे दिया है तुम्हें पाषाण व धातु आदि का परमेश्वर, वह भी एक नहीं, अनेक, वह भी भिन्न-भिन्न रूपा, ताकि हम एक न हो सकें और दे दिया है तुम्हें वरदान कि अब से भगवान् तुम्हें नहीं, तुम भगवान् को पालोगे, नहलाओगे, वस्त्र पहनाओगे, घण्टी बजाकर सुप्त भगवान् को जगाओगे, प्रात:काल उठाओगे और बुलाओगे, सभी पाप कर्मों को गर्दन झुकाते ही माफ करवाओगे।

जिसका भय था वही जेब में आ गया है, शिवालय में बन्द हो गया है, जा कहाँ सकता है बाहर, बिगाड़ क्या सकता है? मुझे पूर्ण स्वतन्त्रता है, मुझ को सभी कर्म-दुष्कर्म करने की और माफ क्यों नहीं करेगा, वह भगवान् जो मेरे द्वारा दिया गया पहनावा पहने, मेरा दिया हुआ खावे, मेरे अन्न पर पला मेरे विपरीत क्या करेगा। जो मुझे अच्छा वह मेरे भगवान् को भी अच्छा, मुझे शराब अच्छी तो मेरे भगवान् को भी अच्छी, मुझे अनेक स्त्रियां अच्छी तो मेरे भगवान् को भी अच्छी, मुझे बकरा अच्छा तो मेरे भगवान् या देवी को भी बकरा अच्छा, जब मैं सभी कार्य करने में स्वतन्त्र, स्वच्छन्द तो मेरे भगवान् का तो कहना ही क्या वह तो सर्व स्वतन्त्र, सर्वशक्तिमान्, चाहे तो आज लखपति बना दे, चाहे तो बिना माता-पिता के अपना बेटा बना दे। घड़े से सीता जैसी स्त्री को बना दे, कर्ण जैसे वीर को कान से उत्पन्न कर दे, मछली के गर्भ से ऋषियों को जन्म दे दे और स्वयं भी जन्म ले ले मेरी रक्षा के लिए, क्योंकि गर्दन जो झुकाता हूँ।

इस प्रकार की भ्रान्तियों में फँसाकर अंध-श्रद्धालुओं के साथ-साथ पढ़े-लिखों को भी ऐसा ही पाठ

क्रमश: पृष्ठ 7 पर.....

आत्मा का दर्शन

गतांक से आगे....

सुषुप्ति अवस्था में आत्मा लोहित पिण्ड हृदय में हिता नाम की सूक्ष्म नाड़ियों में विश्राम करता है। बृहदारण्यकोपनिषद् (अ० 4.2.2) में आये इस प्रकरण के अनुसार सुषुप्ति में जीवात्मा का दोनों स्तनों के मध्य विराजमान हृदय में ही स्थान होता है और वे इसे ही हृदय मानते हैं, मस्तिष्क गत को नहीं। स्वप्नावस्था में उसका स्थान प्राण होते हैं। जाग्रत एवं स्वप्न में स्वयं ज्योतिरूप आत्मा इन्द्रियों के विषयों को प्रकाशित करता है और सुषुप्ति में स्वयं ज्योतिरूप में विराजता है। जैसे देहळी पर रखा दीपक घर के बाहर और भीतर दोनों स्थानों को प्रकाशित करता है वैसे ही एक स्थान पर रहता हुआ आत्मा सारे शरीर के सुख-दु:खादि की अनुभूति करता रहता है। अस्तु।

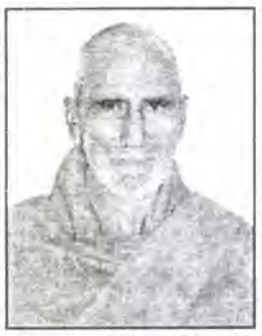
पूज्य आचार्य बलदेव जी

मन्त्र कहता है **इच्छन्नश्वस्य यच्छिर:** इस आत्मा के शीर्ष अर्थात् मुख्य स्थान को जानने की इच्छा वाला योगी **पर्वतेष्वपश्रितम्** मेरुदण्ड में पर्वताकार जो 31 कशेरूकायें हैं उनमें जो मूलाधार से सहस्रार तक जो चक्र हैं प्रथम, उनमें ध्यान को एकाग्र करता है। उसकी यात्रा मूलाधार चक्र से प्रारम्भ होती हुई क्रमश: स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा और फिर सहस्रार चक्र में जाकर समाप्त होती है। जहाँ उसे प्रकाश की अनुभूति होती है और उसकी सहायता से वह मन, बुद्धि, इन्द्रियों का साक्षात्कार करता हुआ हृदय में ध्यान को केन्द्रित कर **शर्यणावति तद् विदत् शर्यणावत्** अर्थात् हृदय में आत्मा-परमात्मा दोनों का साक्षात्कार कर लेता है। (क्रमश:)

—आचार्य बलदेव

ईश्वर, जीव प्रकृति अनादि हैं

ईश्वर, जीव और प्रकृति, ये तीन पदार्थ अनादी।
वेद-शास्त्र ऋषि-मुनियों ने, ये बात खोल बतादी॥

निराकार ईश्वर ने ही, यह सारा जगत् रचाया।
कर्मानुसार फल देता सबको, तनिक फर्क नहीं पाया।
जीवों की रक्षार्थ ही यह, प्रकृति जगत रचाया।
उत्पत्ति कर पालन करे, फिर अन्त में करे सफाया॥
जीव, ईश्वर का अंश नहीं, यह स्पष्ट बात बतादी। ईश्वर जीव..... ॥
जीवन और ईश्वर चेतन हैं पवित्र और अविनाशी।
नहीं जन्मते नहीं मरते, नहीं एक देश के वासी।
सत्तावान पदार्थ दोनों और अवयव रहित अविनाशी।
ज्ञानवान् चेतन हैं दोनों, बिना भार और सर्वत्र वासी।
आत्मा परमात्मा एक नहीं यह बात स्पष्ट बता दी। ईश्वर जीव..... ॥
ईश्वर, जीव का लिंग नहीं, नहीं कोई रंग भेद होता है।
दोनों अनादि अनन्त हैं, नहीं कोई गलन सड़न होता है।
दोनों सक्रिय रहते हैं, नहीं कोई आकार भेद होता है।
बच्चे बूढ़े नहीं बनते दोनों, केवल शरीर ही वृद्ध होता है।
नहीं उपादान नहीं निमित्त कारण, रुद्र होने की बात बतादी। ईश्वर जीव..... ॥
जीव व्याप्य ईश्वर व्यापक, वेद यह बतलाता है।
जीवन सेवक ईश्वर सेव्य, आपस में पिता-पुत्र का नाता है।
श्रेष्ठ कर्मों के कारण प्राणी, मानव चोला पाता है।
पाप कर्मों के कारण प्राणी, पशु और वृक्ष बन जाता है।
जीव से सूक्ष्म परमेश्वर है, यह बात स्पष्ट बता दी। ईश्वर जीव..... ॥
ज्ञान कर्म के कारण मानव, ज्ञान शून्य का भोग करे।
खाद्यपदार्थ पहले बनते, फिर मानव उनका उपभोग करे।
पहले वनस्पति फिर पशु-पक्षी, सब जीवन का समाधान करे।
सर्वशक्तिमान अपने सामर्थ्य से, फिर सृष्टि का निर्माण करे।
ईश्वर द्वारा सृष्टि रचना की बात यहाँ समझा दी। ईश्वर जीव..... ॥

—देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य,
म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी, मो० 9416337609

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

चतुर्थ समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 305. जिस कुल में स्त्रियां प्रसन्न होती हैं और जिस कुल में स्त्रियां दु:खी होती हैं, उस कुल की क्या स्थिति होती है?

उत्तर-जिस कुल में भार्या से भर्त्ता और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती है, उसी कुल में सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं। जहाँ कलह होता है वहाँ दौर्भाग्य और दारिद्र्य स्थिर रहता है। जो स्त्री पति से प्रीति और पति को प्रसन्न नहीं करती, तो पति के अप्रसन्न होने से काम उत्पन्न नहीं होता। जिस स्त्री की प्रसन्नता में सब कुल प्रसन्न होता है उसकी अप्रसन्नता में सब अप्रसन्न अर्थात् दु:ख दायक हो जाता है।

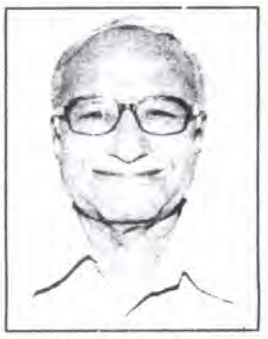
कन्हैयालाल जी आर्य

जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उसमें विद्यायुक्त पुरुष होके देवसंज्ञा धरा के आनन्द से क्रीडा करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहाँ सब क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं। जिस घर वा कुल में स्त्री लोग शोकातुर होकर दु:ख पाती हैं वह कुल शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है और जिस घर वा कुल में स्त्री लोग आनन्द उत्साह और प्रसन्नता से भरी हुई रहती हैं, वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है। इसलिए ऐश्वर्य की कामना करने हारे मनुष्यों को योग्य है कि सत्कार और उत्सव के समयों में भूषण, वस्त्र और भोजनादि का नित्यप्रति सत्कार करें।

यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिए कि 'पूजा' शब्द का अर्थ सत्कार है और दिन-रात में जब-जब मिलें वा पृथक् हों, तब तक प्रीतिपूर्वक 'नमस्ते' एक-दूसरे से करें।

प्रश्न 306. स्त्रियों के क्या कर्त्तव्य हैं?

उत्तर-स्त्री को योग्य है कि अति प्रसन्नता से घर के कामों में चतुराईयुक्त रहे, सब पदार्थों के उत्तम संस्कार, घर की शुद्धि में तत्पर रहें और व्यय में अत्यन्त उदार न रहें अर्थात् सब चीजें पवित्र और पाक इस प्रकार बनावे जो औषधरूप होकर शरीर वा आत्मा में रोग को न आने देवे। जो-जो व्यय हो उसका हिसाब यथावत् रख के पति आदि को सुना दिया करे। घर के नौकर-चाकरों से यथायोग्य काम लेवे। घर के किसी काम को बिगड़ने न देवे।

प्रश्न 307. स्त्रियों का व्यवहार कैसा हो?

उत्तर-सदा प्रिय, सत्य, दूसरे का हितकारक बोलें, अप्रिय सत्य अर्थात् काणे को काणा न बोलें। अनृत अर्थात् झूठ दूसरे को प्रसन्न करने अर्थ न बोलें। सदा भद्र अर्थात् सब के हितकारी वचन बोला करें। शुष्क वैर अर्थात् विना अपराध किसी के साथ विरोध वा विवाद न करें। जो-जो दूसरे का हितकर हो वह बुरा भी माने तथापि कहे विना न रहें।

प्रश्न 308. सत्पुरुषों के क्या कर्त्तव्य हैं?

उत्तर-सत्पुरुषों को योग्य है कि मुख के सामने दूसरे का दोष कहना और अपना दोष सुनना, परोक्ष में दूसरे के गुण सदा कहना। और दुष्टों की यही रीति है कि सम्मुख में गुण कहना और परोक्ष में दोषों का प्रकाश करना। जब तक मनुष्य दूसरे से अपने दोष नहीं सुनता वा कहने वाला नहीं कहता तब तक मनुष्य दोनों से छूटकर गुणी नहीं हो सकता।

प्रश्न 309. 'निन्दा' और 'स्तुति' को परिभाषित करें?

उत्तर-गुणों में दोष और दोषों में गुण लगाना वह 'निन्दा' और गुणों में गुण, दोषों में दोष का कथन करना 'स्तुति' कहलाता है।

प्रश्न 310. 'ब्रह्मयज्ञ' किसे कहते हैं?

उत्तर-वेदादि शास्त्रों को पढ़ना पढ़ाना, सन्ध्योपासन, योगाभ्यास को 'ब्रह्मयज्ञ' कहते हैं।

प्रश्न 311. 'देवयज्ञ' किसे कहते हैं?

उत्तर-विद्वानों का संग, सेवा, पवित्रता, दिव्य गुणों का धारण, दातृत्व, विद्या की उन्नति, अग्निहोत्र को 'देवयज्ञ' कहते हैं। क्रमश:

सुखी कैसे रहें?

❑ भद्रसेन, 182-शालीमार नगर, होशियारपुर-146001 # 9464064398

गतांक से आगे....

प्रत्येक को सदा सन्तुष्ट रहने का यत्न करना चाहिए। जिससे प्रतिकूल परिस्थिति बेचैनी, आत्महीनता पैदा न कर सके। सन्तोष का मूलभाव यही है कि दूसरों की चीजों पर ललचाई नजर या भावना न रखना। सम्भवत: इसी भावना से कहा जाता है—''**रूखा सूखा खा करी, ठण्डा पानी पी। देख पराई चूपड़ी, क्यों ललचाए जी॥**'' और ऐसी भावना वाला व्यक्ति ही '**हर हाल रहे मस्ताना**' की भावना को चरितार्थ कर सकता है। दूसरों के ऐश्वर्य को देखकर रीसो-रीस में अपने परिश्रम से अधिक चाहना, तो वस्तुत: असन्तोष, लोभ ही है, जो कि दु:ख, अशान्ति का कारण बनता है, इसी से आज चारों ओर आपाधापी मची हुई है।

4. इच्छाओं की सीमा-प्रत्येक का यह अनुभव है कि इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है। ये रबड़ की तरह बढ़ाने में बढ़ती हैं और घटाने से घटती हैं। दुनिया के पदार्थों की इच्छा पूरी करते-करते, वे तो पूरी नहीं होतीं, हम ही पूरे हो जाते हैं। अत: सभी इच्छाओं की पूर्ति तीन काल में भी नहीं हो सकती और न ही भौतिक शरीर के रहते हुए कोई इच्छा रहित हो सकता है। हाँ, इच्छारहित तो केवल जड़ ही हो सकता है। जीवन तो मौलिक इच्छाओं को पूरा करने से ही चलता है इसीलिए पुरुषार्थचतुष्टय में काम (इच्छा) का अनिवार्य स्थान है।

इच्छाओं की अनिवार्यता के कारण ही इनको आवश्यकता के नाम से स्मरण कियाजाता है। व्यावहारिक दृष्टि से जब हम इन पर विचार करते हैं तो इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य की इच्छायें, आवश्यकतायें, अनन्त हैं और वे घटती-बढ़ती रहती हैं। ये मौलिक, सहायक और सुविधावर्धक या मनोरञ्जक के भेद से तीन प्रकार की हैं। इनमें परस्पर विरोध भी पाया जाता है। किसी विशेष इच्छा के अधिक तीव्र होने पर दूसरी मन्द पड़ जाती है। इस तरह कभी कोई प्रमुख हो जाती है और कभी कोई। ये थोड़ी देर के लिए ही पूर्ण होती हैं, अत: इनमें पुनरावृत्ति पाई जाती है। जहां ये स्थान, समय, रुचि के भेद से बदलती रहती हैं, वहां सामाजिक स्तर, सभ्यता और ज्ञान के विकास के साथ इनमें वृद्धि भी होती है। कभी कोई आवश्यकता आदत का रूप धारण कर लेती है।

5. सुख का मार्ग-अर्थशास्त्र में चर्चित इच्छाओं के विविध पहलुओं पर विचार करने से हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि न तो प्रत्येक की सारी इच्छायें पूरी हो सकती हैं और न ही शरीर के रहते हुए इच्छा रहित स्थिति हो सकती है। इसलिए सरल और सीधा-सा मध्यमार्ग यही है कि मनुष्य अपनी इच्छाओं को नियन्त्रित, व्यवस्थित, मर्यादित करे। अपने सारे दिन के कार्यों पर विचार कर अपनी दिनचर्या तथा जीवनचर्या को व्यवस्थित करे जिससे अन्त में पश्चात्ताप न हो कि मैंने अमुक कार्य तो किया ही नहीं? अर्थात् शरीर और संसार के व्यवहार के लिए जो इच्छायें आवश्यक हैं, उन्हीं की ही पूर्ति करें। व्यर्थ अपने आपको इच्छाओं का दास न बनाएं। जब इच्छायें अपने वश में होंगी, तो व्यक्ति इनके पूरा न होने पर विचलित नहीं होगा। जैसे यान जब तक नियन्त्रण में रहता है, तभी तक सुख का साधन बनता है, अन्यथा विनाश का तो ताण्डव नृत्य होता है, वह किसी से ओझल नहीं है।

मर्यादा में रहता हुआ ही नदी का जल हमारे अनेक कार्यों को सिद्ध करता है, परन्तु जब वह मर्यादा से बाहर हो जाता है तो बाढ़ का रूप धारण कर हजारों की जान और अरबों की सम्पत्ति का विनाश कर प्रलय का दृश्य उपस्थित कर देता है। यही आग, बिजली के सम्बन्ध में भी प्रतिदिन देखा और सुना जाता है। तभी आचार्य चाणक्य ने कहा है—'**स्वराज्यस्य मूलमिन्द्रियजय:**'। इसीलिए ही भारतीय संस्कृति में संयम, यम-नियम और आत्मानुशासन पर अत्यधिक बल दिया जाता है। स्वतन्त्र, स्वाधीन शब्द भी इसी भाव को व्यक्त करते हैं।

जिस प्रकार घर की सुन्दरता चीजों की अधिकता पर निर्भर नहीं होती, अपितु उपस्थित वस्तुओं की व्यवस्था पर ही निर्भर होती है। वैसे ही जीवन में सुख, शान्ति सन्तोष और आनन्द की प्राप्ति का सम्बन्ध केवल धन, ज्ञान आदि से नहीं है, अपितु इनकी तथा दिनचर्या और जीवनचर्या की व्यवस्था पर निर्भर है।

जैसे कि खाने-पीने की इच्छा स्वाभाविक है, अत: यह जरूरी नहीं कि सब कुछ हर समय खाया जाये अपितु दूरदर्शिता की मांग है कि हित-अहित का ध्यान रखते हुए ऋत-मित भोजन लिया जाए। वैसे तो धन, भोजन, सम्भोग की सारी इच्छायें किसी की भी पूरी नहीं हो सकतीं। अत: संयम, व्यवस्था, मर्यादा में ही सुख है।

वस्तुत: सुख-दु:ख प्राप्त करना बहुत कुछ हमारे विवेक पर निर्भर है। हम चाहें तो सुख अर्जित कर सकते हैं या दु:ख। यह सब हमारे विचारों और जीने के ढंग पर अधिक निर्भर है। इसीलिए एक-एक कार्य में सुख अनुभव करता है और दूसरा दु:ख मानता है।

क्रमश:

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ : आचार्य देवव्रत

दिनांक 8.11.2015 आर्यसमाज नाहरी जिला सोनीपत एवं समस्त ग्रामवासियों द्वारा महामहिम राज्यपाल डॉ० आचार्य देवव्रत जी का नागरिक अभिनन्दन बड़ी धूमधाम के साथ किया गया। उनके पहुँचने के बाद सैकड़ों मोटर साइकिल सवार युवाओं ने बैंडबाजे के साथ गांव की सीमा से समारोह स्थल तक जय-जयकार करते हुए लाया गया। स्कूल द्वार से मञ्च तक सैकड़ों व्यक्तियों द्वारा फूल-मालाओं से स्वागत किया। गांव के वयोवृद्ध व्यक्ति ने पगड़ी एवं चांदी के सिक्के के साथ सम्मानित किया। पूर्व प्रधान इन्द्रजीत एवं मंत्री आर्यसमाज द्वारा स्मृतिचिह्न भेंट किया। गुरुकुल नरेला की कन्याओं के ईशगान तथा नाहरी स्कूल कन्याओं के स्वागत गान के साथ सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। आर्यसमाज के प्रधान ने उनकी जीवनी पर प्रकाश डाला। आचार्य धर्मव्रत जी, श्री रामपाल जी सहित कई वक्ताओं ने आचार्य देवव्रत जी की कार्यकुशलता की प्रशंसा की।

अन्त में महामहिम जी ने अपने वक्तव्य में समाज अशिक्षा, नशाखोरी, जातिप्रथा, बेरोजगारी, भ्रूणहत्या, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आदि विषयों पर गंभीर विचार रखे। उन्होंने कहा कि आमजन की मानसिकता बदले बिना किसी बुराई को मिटाया नहीं जा सकता। हर व्यक्ति को स्वार्थ की भावना का त्याग कर राष्ट्रप्रेम की भावना को अपने अन्दर जागृत करना होगा। इस मुहिम को आगे बढ़ाने में लोगों से सहयोग की अपील की।

—रामस्वरूप आर्य, प्रधान
आर्यसमाज नाहरी जिला सोनीपत

एक मण घी का बृहद् यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 13 से 15 नवम्बर 2015 को आर्यसमाज मोहदीपुर जिला रेवाड़ी का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य वेदमित्र जी पतञ्जलि योगाश्रम भऊ रोहतक के सान्निध्य में बृहद् यज्ञ हुआ तथा अनेक यजमान दम्पतियों द्वारा भी पूर्ण श्रद्धा से हवन सम्पन्न हुआ।

आचार्य जी के उपदेश से गाँव में यज्ञ के प्रति अति श्रद्धा उत्पन्न हुई। युवाओं को जनेऊ भी प्रदान कये गये तथा अन्त में बहन उषा शास्त्री के मधुर भजन भी प्रस्तुत किये गये। -मन्त्री, आर्यसमाज मोहदीपुर (रेवाड़ी)

॥ ओ३म्॥

गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर का शताब्दी समारोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 12, 13 मार्च 2016 (शनिवार, रविवार) को मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर बड़े-बड़े राजनेता, संन्यासीगण, विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जाएगा।

आप सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि इस शताब्दी समारोह में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

निवेदक :

विद्यार्यसभा, गुरुकुल झज्जर मो०नं० 9416055044

वह पूर्ण है

❑ प्राचार्य अभय आर्य

अभी नवरात्र के नाम पर जब अंधविश्वास के रूप में देवी माता का पूजन किया गया तो मुझे विचार आया कि इन माता वालों के लिए तो '**त्वमेव माता च पिता त्वमेव०**' प्रार्थना का कोई औचित्य ही नहीं है, क्योंकि वे तो उस सर्वशक्तिमान् को केवल माता मानकर वह भी मिथ्या रूप में पूज रहे हैं। शैव सम्प्रदाय वालों ने 'शिव' का अर्द्धनारीश्वर रूप गढ़कर शायद इस अधूरेपन को दूर करने का प्रयास किया लेकिन बेचारे भूल गये कि वह आधा माता व आधा पिता नहीं है। वह पूर्ण है। लौकिक माता-पिता की तरह माता या पिता के महत्त्व का तुलनात्मक विश्लेषण उसमें कैसे करेंगे? उस एक में ही माता, पिता, मित्र, देव, देवी के गुण समाहित हैं और वे भी पूर्ण रूप में। ऋषि दयानन्द कितनी स्पष्ट घोषणा करते हैं कि ईश्वर जैसा न कोई था, न है और न ही होगा। काल्पनिक ईश्वर सब अधूरे हैं। पुराणों के काल्पनिक ब्रह्मा, शिव, विष्णु, आदिशक्ति, सामर्थ्य, सत्य, न्याय, सबमें अधूरे हैं। पुराणों की कहानियां इस तथ्य को स्पष्ट कर देती हैं। एक महिमा से वह एक ही सर्वोपरि विराजमान है—'**स एष एक एकवृदेक एव।**' यदि हृदय में अंगुष्ठ मात्र स्थान में हम उसका ध्यान करते हैं, तो वहां भी वह पूर्ण ही है। उसमें न छिद्र है, न उसके टुकड़े हो सकते हैं। अत: उस पूर्ण से पूर्ण लेने पर भी वह पूर्ण ही बचता है। हम जिस मनुष्य को अपना आदर्श मानते हैं वह भी अनेक बार सत्य, न्याय, ज्ञान की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। बड़े से बड़े ऋषि भी '**नेति-नेति**' व '**चरैवेति-चरैवेति**' के न्याय को मानते हैं। अत: पूर्ण तो वह अकेला ही है।

आचार्य अभय आर्य

आचार्य योगेन्द्र जी द्वारा कारोडा (कैथल) में प्रस्तुत कार्यक्रम की झलकियां

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी, रोहतक के प्रांगण में शुक्रवार, दिनांक 11 दिसम्बर से रविवार 13 दिसम्बर 2015 तक ऋग्वेद आंशिक यज्ञ भजन एवं उपदेश का आयोजन किया जा रहा है जिसमें अध्यक्ष-आचार्य बलदेव जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली), विशिष्ट अतिथि-श्री रामपाल दहिया (मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), मुख्यवक्ता-आचार्य प्रमोद योगार्थी (प्राचार्य, ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार), मुख्य अतिथि श्री सूरजमल रोज (पार्षद, नगर निगम, रोहतक), भजनोपदेशक-श्रीमती सन्तोष आर्या (गन्नौर), यज्ञ ब्रह्मा-स्वामी ध्रुवानन्द (गोरड़ आश्रम, सोनीपत) होंगे।

आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से अनुरोध है कि कार्यक्रम में पहुंचकर धर्म लाभ उठावें। —कर्णसिंह मोर, प्रधान आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी, रोहतक मो० 9728884949

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज मन्दिर जवाहर नगर, पलवल	25 से 29 नव० 2015
2.	आर्यसमाज चरखी दादरी, जिला भिवानी	28 से 29 नव० 2015
3.	आर्यसमाज जीन्द शहर	27 से 29 नव० 2015
4.	आर्य युवा महासम्मेलन, पानीपत स्थान-आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत	6 दिसम्बर 2015
5.	आर्यसमाज मण्डी डबवाली जिला सिरसा	9 से 13 दिसम्बर 2015
6.	आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी, रोहतक	11 से 13 दिसम्बर 2015
7.	श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास 119, गौतम नगर, नई दिल्ली-49	16 नव० से 6 दिस० 2015 —सभामन्त्री

अपील

सभी आर्यसमाजों, सदस्यों, सक्षम दानी महानुभावों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के परिसर में 24 कमरों का निर्माण कार्य चल रहा है। सभा कार्यालय परिसर में ऋषिलंगर (भोजनालय) चलता है। अतिथियों के लिए भोजन की नियमित सुन्दर व्यवस्था की जा रही है। सभा के ऋषिलंगर (भोजनालय) में साधु-संन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी नि:शुल्क भोजन करते हैं। साथ ही प्रतिदिन प्रात:-सायं नियमित रूप से यज्ञ किया जाता है। आप अपनी वैवाहिक वर्षगांठ, जन्मदिवस, गृहप्रवेश या अन्य अवसर पर सहयोग कर सकते हैं। सहयोगदाता का नाम सभा के साप्ताहिक समाचार-पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' में प्रकाशित किया जायेगा। अत: समस्त दानी महानुभावों से अपील है कि सभा परिसर में चल रहे निर्माणकार्य एवं सभा के ऋषिलंगर भोजनालय हेतु अधिक से अधिक दानराशि एवं आटा, दाल, चावल, घी, गेहूँ अथवा अन्य प्रकार से सहयोग देकर एक आहुति अवश्य डालें और इस पवित्र यज्ञ के सफल संचालन में सहभागी बनें।

नोट—दो लाख पचास हजार रुपये देने वाले दानी महानुभावों का नाम नवनिर्मित कमरे के साथ उसके नाम का पत्थर लगाया जाएगा।

निवेदक—

आचार्य बलदेव	आचार्य विजयपाल	मा. रामपाल आर्य	कन्हैयालाल आर्य
सभा-संरक्षक	सभा-प्रधान	सभा-मन्त्री	सभा-कोषाध्यक्ष

वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार का पारिवारिक यज्ञों द्वारा धुआंधार प्रचार तथा आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के बढ़ते कदम

दिनांक 11.11.2015 को वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री द्वारा तलाकी गेट हिसार में वेदप्रकाश आर्य की दुकान में हवन किया। वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य भी साथ थे। आचार्य जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन व कार्यों पर विचार रखे। प्रधान जी ने गायत्री महामंत्र पर सरल शब्दों में प्रकाश डाला। 12.11.2015 को मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य द्वारा हिसार में श्री गजानन्द के घर पर पारिवारिक यज्ञ किया उन्होंने सुखी गृहस्थ पर प्रकाश डाला।

आर्यसमाज पटेल नगर में 12-13-14 नवम्बर को प्रात: श्री अश्विनी के घर पर पारिवारिक यज्ञ किया, श्री अजय बत्रा के घर पारिवारिक यज्ञ किया। उपरोक्त तीनों परिवारों में मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी ने यज्ञ की महिमा तथा महर्षि दयानन्द की समाज को देन पर विचार रखे। हिसार में मुलतानी चौक में 21 कुण्डीय यज्ञ आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी द्वारा 12 नवम्बर को पर्यावरण शुद्धि के लिए किया। एक दो जगह कार्यक्रमों में अत्तरसिंह स्नेही भी साथ रहे।

आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में 15.11.2015 को साप्ताहिक सत्संग विधिवत् सम्पन्न हुआ। प्रात: 9 बजे आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। विद्यालय के छात्रों ने मन्त्रपाठ किया। आचार्य जी ने यज्ञ की वैज्ञानिक पक्ष पर प्रकाश डाला। सभा की अध्यक्षता चौ० निहालसिंह आर्य पूर्व इंस्पेक्टर ने की। मुख्यवक्ता ब्र० दीपकुमार आर्य उपप्रधान वेदप्रचार मण्डल थे। श्री आर.एस. चुग व विद्यालय के छात्रों के ईश्वरभक्ति और राष्ट्रभक्ति पर भजन हुए। डॉ० साहब ने मंच का संचालन किया। ब्र० दीपकुमार ने बताया कि योग साधना से खुलता है सुख-शान्ति का द्वार ब्र० जी का योग पर प्रेरणा दायक प्रवचन हुआ। श्री निहाल सिंह जी ने कहा कि सारी बुराइयों का निदान वेदों में है। वेदमार्ग पर चलो। अतत्रसिंह स्नेही ने सबका धन्यवाद किया। श्री रामकुमार आर्य प्रधान, युद्धवीर सिंह आर्य, सूबेदार हरिसिंह आर्य, डॉ० बलवन्त सिंह आर्य आदि काफी संख्या में नर-नारी उपस्थिति थे। —**प्रमोद लाम्बा, मन्त्री**

पंचयज्ञ सुखकारी

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

पंच यज्ञ रोजाना करना, शुरू करो नर-नारी।
बन जाएगी स्वर्ग सज्जनो, फिर यह दुनिया सारी॥
पहला यज्ञ है ब्रह्मयज्ञ, सब ईश्वर गुण गाओ।
जगतपिता है जग का स्वामी, उसे नहीं बिसराओ।
शाम-सबेरे बड़े प्रेम से, परमेश्वर को ध्याओ।
बनो आस्तिक प्रभुभक्त तुम, जीवन सफल बनाओ।
जग का पालक है वह अद्भुत, दयावान न्यायकारी।
बन जाएगी स्वर्ग सज्जनो, फिर यह दुनिया सारी॥
देवयज्ञ है यज्ञ दूसरा, जग में हवन कहाता।
होता विश्व सुगन्धित जिससे, प्रदूषण मिट जाता।
जो करते हैं यज्ञ पास में, रोग ना उनके आता।
बड़ा भाग्यशाली है याज्ञिक दीर्घायु वह पाता।
घर-घर में सब यज्ञ रचाओ, देव यज्ञ सुखकारी।
बन जाएगी स्वर्ग सज्जनो, फिर यह दुनिया सारी॥
मात-पिता की सेवा करना, पितृयज्ञ कहलाता।
मात-पिता के सेवक को, देता है सुफल विधाता।
मात-पिता आचार्य जनों की, जो करते सेवा।
सुखी सदा जीवन में रहते, पाते सच्ची मेवा।
देव लोक पाते हैं सज्जन, कहते वेदाचारी।
बन जाएगी स्वर्ग सज्जनो, फिर यह दुनिया सारी॥
चौथा यज्ञ बलिवैश्व देव सब दयावान बन जाओ।
मानव हो मानवता धारो, काम जगत के आओ।
चींटी से हाथी तक सबको, खुश होकर दो भोजन।
बनो तपस्वी, त्यागी, धर्मी, होंगे प्रभु के दर्शन।
राम कृष्ण, चाणक्य, शिवा से, बनो वीर व्रतधारी।
बन जाएगी स्वर्ग सज्जनो, फिर यह दुनिया सारी॥
अतिथि यज्ञ है यज्ञ पांचवां, घर आए यदि सज्जन।
साधु-संतों विद्वानों का, स्वागत करो लगा मन।
ज्ञान प्राप्त कर विद्वानों से, बन जाओ तुम ज्ञानी।
पंचयज्ञ सुखकारी, स्वामी दयानन्द ने मानी।
'नन्दलाल' नित वेद पढ़ो तुम, सुख पाओगे भारी।
बन जाएगी स्वर्ग सज्जनो, फिर यह दुनिया सारी॥

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

आर्य बाल भारती ने रससाकसी में रचा इतिहास

50वीं हरियाणा राज्य स्तरीय रससाकसी खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन करनाल में दिनांक 19.11.15 से 21.11.15 तक किया गया जिसमें पानीपत जिले की ओर से आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल की अण्डर 17 एवं अण्डर 19 की छात्राओं ने भाग लिया जिसमें अण्डर 19 में फाइनल में सिरसा को हराकर प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा अण्डर 17 में कुरूक्षेत्र को हराकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। यह पानीपत जिले के साथ विद्यालय के लिए एक बहुत गौरवमय इतिहास है। विद्यालय के डी.पी. जगदीश चहल ने बताया कि प्रतियोगिता बहुत कड़े मुकाबले की थी परंतु यह कीर्तिमान बच्चों के परिश्रम का ही फल था विद्यालय में पहुंचने पर विद्यालय के प्रधान आजाद सिंह आर्य, उपप्रधान बिजेंद्र पूनिया, ए.ई.ओ. कर्णसिंह पूनिया आदि ने बच्चों को शुभकामनाएं तथा आशीर्वाद प्रदान कर अण्डर 19 को सरकार की ओर से एक-एक हजार तथा अण्डर 17 को 750 रुपए देकर प्रोत्साहित किया। विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य ने बच्चों को संदेश देते हुए कहा कि बच्चों को खेलों के साथ-साथ पढ़ाई का भी महत्व समझना चाहिए।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रेखा शर्मा ने सभी को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि खेलों का जीवन में बहुत महत्व बताया। विद्यालय के संस्त धर्माचार्य श्री राजकुमार शर्मा ने कहा कि लग्न व परिश्रम से ही सफलता प्राप्त होती है। इस अवसर पर संदीप आर्य, गुलाब सिंह, प्रदीप, राजेश आदि उपस्थित रहे।

–**रेखा शर्मा, प्रिंसिपल**

शोक-समाचार

स्वतन्त्रता सेनानी स्व० हीरासिंह आर्य के सुपुत्र एवं वेदप्रचार मण्डल हिसार के उपमन्त्री मा० दिलबाग सिंह आर्य के पिता तथा आर्यसमाज उमरा (हिसार) के प्रधान श्री बलवन्त सिंह आर्य का 12.11.2015 को 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया। सायं 4 बजे उमरा में दाह-संस्कार किया गया। संस्कार में गांव-गुहाण्ड के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अतिरिक्त सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। 20.11.2015 को शोकसभा (शान्तियज्ञ) गाँव में उनकी बैठक के सामने चौक में प्रात: 10 बजे किया गया। वह अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये। वे स्वयं पंचायती व्यक्ति थे। परमपिता परमेश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार को उनके शेष अधूरे कार्य को पूरा करने की शक्ति दे।

—**वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, संरक्षक वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार**

गुरुकुल आर्यनगर का 51वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल आर्यनगर हिसार का वार्षिक महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 4-5-6 नवम्बर 2015 को अथर्ववेद पारायण यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान् आचार्य हरिप्रसाद (गाजियाबाद) थे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मन्त्रपाठ किया। प्रतिदिन गांव व शहर के प्रतिष्ठित तीन यजमान दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया और यज्ञोपवीत लिया तथा बुराइयों से दूर रहने का व्रत ग्रहण किया। 7 नवम्बर को गुरुकुल के कार्यकारी प्रधान पं० रामजीलाल पूर्व सांसद ने ध्वजारोहण किया। आचार्य हरिप्रसाद ने संस्कारों का महत्त्व, सुखी गृहस्थ, राष्ट्ररक्षा आदि विषयों पर प्रतिदिन प्रवचन हुआ। इस अवसर पर बहन कल्याणी के ईश्वर भक्ति के भजन हुए।

7-8 नवम्बर 2015 को 10 बजे से 1 बजे तक सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन हुआ। बदलुराम जी ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर चौ० हरिसिंह सैनी, आचार्य सोमदेव अजमेर का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० उदयवीर जी व पं० प्रताप सिंह आर्य के शिक्षाप्रद भजन हुए। इसी दिन 3 से 6 की बैठक में सेठ रामधारी, चन्द्रोदेवी आर्या द्वार का उद्घाटन श्रीमती नैनासिंह चौटाला विधायक डबवाली ने किया। गुरुकुल द्वार सेठों ने 14 लाख रुपये लगाकर बनवाया है।

सभा की अध्यक्षता श्री सेठ राजकुमार आर्य ने की। इस अवसर पर डॉ० कमला गुप्ता सचिव हरयाणा सरकार, वेद नारंग विधायक बरवाला, अनूप धानक विधायक उकलाना, रणवीर सिंह विधायक नलवा, डॉ० रमेश लीखा, पं० रामजीलाल पूर्व सांसद, डॉ० सावंतसिंह, शीला भ्याण, डॉ० अनामिका, स्वामी सर्वदानन्द जी आदि ने अपने विचार रखे। मुख्य अतिथियों को साल देकर सम्मानित किया। नैनासिंह ने गुरुकुल शिक्षा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। रणवीर सिंह गंगवा ने कहा कि गुरुकुल में ही अच्छे संस्कार दिये जाते हैं। संस्कारित छात्र ही देश के निर्माण में अहम् भूमिका निभा सकते हैं।

8 नवम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद सेठ रामरिच्छपाल गुरेरा वाले की अध्यक्षता में सम्मेलन हुआ। इसमें स्वामी सर्वदानन्द का प्रवचन हुआ। गुरुकुल के प्रधान स्वामी सुमेधानन्द सीकर के सांसद ने बताया कि वेदमार्ग पर चलकर देश में शान्ति व प्रगति हो सकती है। पं० उदयवीर, बेटी कल्याणी, पं० प्रतापसिंह आर्य के शिक्षाप्रद भजन हुए। सेठ जी ने छात्रों को पारितोषिक (इनाम) दिया तथा छात्रों ने अद्भुत व्यायाम प्रदर्शन दिखाया। मन्त्री लाल बहादुर एडवोकेट ने सबका धन्यवाद किया। गुरुकुल के कुलपति आचार्य रामस्वरूप ने आरम्भ से अन्त तक कुशल मंच का संचालन किया। सेठ ने एक लाख रुपये का सहयोग गुरुकुल को दिया। मुख्य अधिष्ठाता मानसिंह पाठक ने इनका धन्यवाद किया। इस अवसर पर निम्न व्यक्ति मंच पर श्री युद्धवीर सिंह आर्य, डॉ० सतवीर मलिक वेदालंकार, रामकुमार आर्य मण्डल प्रधान, मंडल संरक्षक वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, डॉ० प्रमोद, कर्नल ओमप्रकाश आर्य, सूबेसिंह आर्य जिला पार्षद, सेठ सत्यप्रकाश मित्तल, सतीश बैनीवाल आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर चौ० निहालसिंह आर्य, आचार्य संजीव गुरुकुल आर्यनगर, डॉ० बारूराम आर्य, ब्र० दीपकुमार, सु० हरिसिंह आर्य, राजवीर आर्य प्रो०, महेन्द्र आर्य, सीताराम आर्य, स्त्री आर्यसमाज की प्रधाना माता शत्रोदेवी आदि मौजूद थे। इस अवसर पर सभी ने ऋषिलंगर में भोजन किया।

—**रणधीर आर्य अध्यापक,** गुरुकुल आर्यनगर जिला हिसार

जन्मदिवस पर यज्ञ तथा महापुरुषों को याद किया

दिनांक 11.11.2015 दीपावली को आर्य निवास नलवा (हिसार) में श्री राजवीर आर्य लैक्चरार का 38वें जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन किया गया तथा दो महापुरुषों को भी याद किया गया। महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही द्वारा यज्ञ किया गया। स्नेही जी ने परमपिता परमेश्वर से राजवीर आर्य को अच्छा स्वास्थ्य व लम्बी आयु की कामना की गई। दीपावली पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला। अन्य आशीर्वाद देने वालों में श्री भलेराम आर्य, श्रीमती सुनेहरी आर्या, श्रीमती केला आर्या, डॉ० कुलदीप आर्य आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर वानप्रस्थी जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि श्री रामचन्द्र जी ईमानदार, चरित्रवान्, त्यागी-तपस्वी, मर्यादापुरुषोत्तम, वैदिक विद्वान्, आदर्श राजा तथा अन्याय के विरोध लड़ने वाला योद्धा बताया।

दूसरे महान् पुरुष स्वामी दयानन्द थे। स्नेही जी ने इनके भी जीवन व कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि स्वामी जी ने 17 बार जहर पिया, 18 घण्टों की समाधि छोड़ी, देश की गुलामी व गरीबी पर रोये, स्वामी जी ने सबसे पहले देश की आजादी की आवाज उठाई। 7 अप्रैल 1875 ई० में मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि आदि 40 पुस्तकें लिखीं, 10 सार्वभौमिक आर्यसमाज के नियम लिखे, सर्वप्रथम 1878 ई में रेवाड़ी (हरयाणा) में गोशाला की स्थापना की। नारी उत्पीड़न, बालविवाह, वृद्धविवाह, सतीप्रथा, अन्धविश्वास आदि के खिलाफ आवाज उठाई ,लोगों से वेदमार्ग पर चलने की आवाज उठाई। हम सब ने स्वामी जी के निर्वाण दिवस पर पत्थर पूजा, शराबखोरी, धार्मिक पाखण्ड, गोहत्या, कन्या भ्रूणहत्या, ताश खेलना, जुआ खेलना आदि सामाजिक बुराइयों के खिलाफ संगठित होकर आवाज उठानी चाहिए। तभी हमारा दीपावली पर्व मनाना सफल होगा।

—**नरेन्द्र आर्य, मन्त्री आर्यसमाज नलवा (हिसार)**

इसराना (पानीपत) में आर्यसमाज मन्दिर की स्थापना

दिनांक 18.10.2015 को गांव इसराना जिला पानीपत में मा० रामपाल दहिया (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) की अध्यक्षता में हवन किया गया तथा आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन किया गया। इस मौके पर आस-पास के गांवों से काफी संख्या में आर्यजन पहुँचे।

—**मा० सूरतसिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज इसराना, जिला पानीपत**

आत्मिक ज्ञान और पुण्य खरीदे.... पृष्ठ 2 का शेष....

सिखाते रहना पूजाविधि के ठेकेदारों का स्वभाव बन गया है। **समस्त अज्ञान से दूर होना हो और सच्चा आस्तिक बनना हो तो राम-कृष्ण की भांति उसी ईश्वरोपासना को अपनाओ जो उन्होंने स्वयं अपनाई थी।**

ईश्वर की साधना में आन्तरिक भाव काम करते हैं। बाहर से, ऊपर-ऊपर से किये गये काम या व्यवहार नहीं। अगर आप दान अहंकारवश देते हैं कि चार लोगों में समाज में मेरी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, लोग मुझे महादानी, महात्यागी, महाधार्मिक समझेंगे, वाह-वाह होगी, ताली बजेगी, सम्मान मिलेगा, विशेष पद मिलेगा तो आपका मूल भाव अहंकार एवं लालच है। यह तामसिक दान है। तब आपको दुनिया की कोई शक्ति, कोई नियम वह पुण्य नहीं दे सकता, जिसे सात्त्विक श्रेणी में रखा जा सके। आपके भाव के अनुसार आपको क्षणिक सुख या तृप्ति तो मिल सकती है, लेकिन भविष्य में इसका परिणाम आपकी आशा के अनुकूल नहीं होगा। क्योंकि बीज गलत है अब यदि आप दान इस भाव से दे रहे हैं कि जा ले जा तू तो निकृष्ट है, मैं उत्कृष्ट हूँ तो इस दान में भी अहंकार की पुट है और नकारात्मक फल ही मिलेगा। इसलिए भारत में इस भाव से 'दक्षिणा' शब्द का उपयोग किया कि आप कृतज्ञ हो रहे हैं कि सामने वाला आपका दान सहज स्वीकार कर रहा है अगर आप दान देकर कोई अपेक्षा रखते हैं तो याद रखें आप सच्चे दान के फल से वंचित ही रहेंगे। बल्कि यह एक स्वार्थमय दान भिखारीपन है, एक मांग है, एक लालच है, एक आकांक्षा है। तब फल भी आपको, इन भीतरी भाव के अनुसार ही मिलेगा। इसका अन्तिम परिणाम उस दु:ख के रूप में मिलता है जो आपकी अपेक्षा की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है।

संपर्क-डीएनवाई व मॉस्टर कॉस्मिक एनर्जी हीलर, चरित्र निर्माण मंडल, सैनी मौहल्ला, ग्राम-शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61
मो० 9871644195

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

स्वास्थ्य-चर्चा.....

पेट की सेहत न बिगाड़ दे

❑ शमीम खान

हर व्यक्ति के शरीर में बनती है गैस। यह शरीर से बाहर या तो डकार द्वारा या गुदामार्ग से निकलती है। अधिकतर लोग 1 से 4 पिंट्स गैस पैदा करते हैं और एक दिन में कम से कम 14 से 23 बार गैस पास करते हैं। जिनकी पाचन शक्ति अक्सर खराब रहती है और जो प्राय: कब्ज के शिकार रहते हैं, उनमें गैस की समस्या अधिक होती है। मशीनों पर निर्भर आधुनिक जीवनशैली ने शारीरिक सक्रियता काफी कम कर दी है। लोगों ने अपनी खानपान की आदतें भी काफी बिगाड़ ली हैं। उन्हें आराम से चबा-चबाकर पोषक भोजन खाने के बजाय जल्दी-जल्दी जंक फूड खाना पसंद है। यही वजह है कि आजकल गैस की समस्या से काफी लोग परेशान रहते हैं। लम्बे समय तक रहने वाली गैस की समस्या अल्सर में बदल सकती है और कई तरह की समस्याएं पैदा कर सकती हैं।

क्यों बनती है गैस

निगली गई हवा द्वारा-एरोफैगिया या निगली गई हवा पेट में गैस बनने का सबसे प्रमुख कारण है। हर कोई थोड़ी मात्रा में खाते और पीते समय हवा निगल लेता है। हालांकि जल्दी-जल्दी खाने या पीने, च्यूंगम चबाने, धूम्रपान करने से कुछ लोग ज्यादा हवा अन्दर ले लेते हैं, जिनमें नाइट्रोजन, ऑक्सीजन और कार्बन-डाई-ऑक्साइड होती है। कुछ हवा डकार के द्वारा बाहर निकल जाती है, लेकिन कुछ आंत में चली जाती है। बची हुई थोड़ी-सी गैस यहाँ से बड़ी आँत में चली आती है, जो गुदामार्ग द्वारा बाहर निकलती है।

अनपचे भोजन के टूटने से-शरीर कुछ कार्बोहाइड्रेट को न तो पचा पाता है और न ही अवशोषित कर पाता है। कई भोज्य पदार्थों में शूगर, स्टार्च और रेशे पाए जाते हैं। छोटी आंत में कुछ निश्चित एंजाइमों की कमी या अनपचा भोजन छोटी आंत से बड़ी आंत में जाता है, जहाँ बैक्टीरिया इस भोजन को तोड़ते हैं। इससे हाइड्रोजन, कार्बन डाई-ऑक्साइड और एक तिहाई लोगों में मिथेन निकलती है। उम्र बढ़ने के साथ शरीर में एंजाइम का स्तर कम हो जाता है, इसलिए गैस की समस्या ज्यादा बढ़ जाती है।

लक्षण और समस्याएं-पेट में गैस बनने के सबसे आम लक्षण है पेट फूल जाना, पेट में दर्द होना, डकार आना और गैस पास करना। इनके कारणों को समझकर उपचार किया जा सकता है।

डकार लेना-जब कोई व्यक्ति खाने के दौरान या बाद में डकार लेता है तो इसका अर्थ है कि उसने खाने के साथ ज्यादा मात्रा में हवा निगल ली है। लेकिन ज्यादा डकार आने के कारण पाचन तन्त्र के ऊपरी भाग में पेप्टिक अल्सर या गैस्टपारेसि जैसी समस्याएं हो सकता है।

फ्लैटुलेंस-इसे सामान्य भाषा में गैस पास करना कहते हैं। अधिकतर लोग यह नहीं जानते कि एक दिन में 14-23 बार गैस पास करना सामान्य बात है। अधिक गैस बनना कार्बोहाइड्रेट के अवशोषण नहीं होने का संकेत है।

पेट फूलना-पेट का फूलना गैस की वजह से हो सकता है या बड़ी आंत का कैंसर या हार्नियां भी इसका कारण बन सकता है। ज्यादा वसायुक्त भोजन करने से पेट देर खाली होता है। इससे भी पेट फूल जाता है और बेचैनी होती है।

पेट दर्द-जब आंत में गैस मौजूद होती है, तब कुछ लोगों को पेट दर्द होता है। जब बड़ी आंत की बायीं ओर दर्द होता है, तो इससे हृदय रोग का भ्रम होता है, लेकिन जब दर्द दायीं ओर होता है, तो यह एपेण्डिक्स हो सकता है।

ये मुश्किलें बढ़ा सकती हैं गैस

- जीभ पर सफेद पर्त जमा होने से खाने का जायका बिगड़ सकता है।
- सांस में बदबू की समस्या का सामना करना पड़ सकता है।
- मल से बदबू आने की समस्या हो सकती है।

गैस से दुर्गन्ध क्यों आती है-शरीर में बनने वाली गैस प्राथमिक तौर पर गंधहीन होती है। कभी-कभी गुदा मार्ग से निकलने वाली गैस में जो अरुचिकर गंध होती है, वह बड़ी आंत से थोड़ी मात्रा में बनने वाली गैस के कारण होती है, जिसमें सल्पर होता है।

घरेलू नुस्खे

- लहसुन पाचन की प्रक्रिया को बढ़ाता है और गैस की समस्या को कम करता है।
- नारियल पानी गैस की समस्या में काफी प्रभावकारी है।
- अदरक में पाचक एंजाइम होते हैं। खाना खाने के बाद अदरक के टुकड़ों को नींबू के रस में डुबोकर खाएं। गैस की समस्या से छुटकारा मिलेगा।
- लम्बे समय से गैस से पीड़ित हैं तो लहसुन की तीन कलियां और अदरक के कुछ टुकड़ों को खाली पेट खायें।
- प्रतिदिन खाने के साथ टमाटर खायें। अगर टमाटर में सेंधा नमक मिला लें तो और अधिक फायदेमंद रहेगा।
- पुदीना खाएं, क्योंकि इससे पाचन तन्त्र ठीक रहता है।
- हरी इलायची के पाउडर को एक गिलास पानी में उबालें। इसको खाना खाने के पहले गुनगुने रूप में पी लें। इससे गैस कम बनेगी।

ज्यादा गैस बनाने वाले भोजन

- कार्बोनेटेड ड्रिंक्स और वाइन न पीएं, ये कार्बन-डाई-ऑक्साइड छोड़ती है।
- पाइप के द्वारा कोई चीज न पीयें, बल्कि सीधे गिलास से पीयें।
- तला-भुना, मसालेदार भोजन न करें।
- तनाव भी गैस बनाने का एक प्रमुख कारण है, इससे दूर रहने की कोशिश करें।
- कब्ज भी इसका एक कारण हो सकता है। जितने लम्बे समय तक भोजन बड़ी आंत में रहेगा, उतनी मात्रा में गैस बनेगी।
- खाने को धीरे-धीरे और चबाकर खायें। दिन में तीन बार की बजाय कुछ-कुछ घंटों के अन्तराल पर मिनी मिल खाएं।
- खाकर तुरन्त न सोएं। थोड़ी देर टहलें ताकि पाचन भी ठीक रहे, पेट भी नहीं फूले।
- अपनी बॉयोलोजिकल घड़ी को दुरुस्त करने के लिए निश्चित समय पर खाना खायें।
- कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन ज्यादा गैस बनाते हैं। वसा और प्रोटीन युक्त भोजन कम मात्रा में गैस बनाते हैं।
- लैक्टोस से यह समस्या होती है तो दूध और दूध से बने उत्पाद न लें।
- मौसमी फल और सब्जियों का सेवन करें।
- चाय, कॉफी और कार्बोनेटेड सॉफ्ट ड्रिंक का इस्तेमाल कम करें।
- जंक फूड और स्ट्रीट फूड न खायें।
- व्यायाम, योग को दिनचर्या में शामिल करें और पैदल चलने की आदत डालें।
- धूम्रपान और शराब से दूर रहें।
- अधिक से अधिक रेशेदार भोजन लें।
- सर्वांगासान, उत्तानपादासन, भुजंगासन आदि नियमित रूप से करना चाहिए। (साभार-आत्मशुद्धिपथ)

दीपावली पर्व पर पारिवारिक यज्ञों का आयोजन

दीपावली के अवसर पर 11.11.2015 को निम्न परिवारों में वेदप्रचार व सत्संग का आयोजन किया गया। वैदिक विद्वान् डॉ० प्रमोद योगार्थी ने पं० ताराचन्द की कोठी में यज्ञ व सत्संग किया। सत्यकाम आर्य की कोठी में डॉ० प्रमोद योगार्थी द्वारा यज्ञ व सत्संग किया गया। डॉ० अत्तरसिंह यादव की कोठी में भी यज्ञ किया गया। डॉ० प्रमोद योगार्थी जी ने उपरोक्त परिवारों में यज्ञ किया। सुखी गृहस्थ कैसे जीवें पर आचार्य जी ने सारगर्भित विचार रखे।

वेदप्रचार मण्डल हिसार के प्रधान श्री रामकुमार आर्य के घर पर व फैक्टरी में तथा गुरुकुल आर्यनगर में यज्ञ किया गया। वैदिक विद्वान् आचार्य पं० रामस्वरूप आर्य संरक्षक द्वारा यज्ञ किया गया। उपरोक्त स्थानों में आचार्य जी ने आत्मा-परमात्मा तथा यज्ञ के महत्त्व पर सारगर्भित विचार रखे। अनाजमण्डी में पारिवारिक सत्संग श्री बजरंगलाल आर्य के नव गृहप्रवेश पर मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी द्वारा हवन किया गया। आचार्य जी ने पंच महायज्ञ व संस्कारों पर सरल शब्दों में सुन्दर व्याख्या की। गत वेदप्रचार की मीटिंग में सर्वसम्मति से फैसला लिया गया कि वेदप्रचार मण्डल की ओर से पारिवारिक यज्ञ का कार्यक्रम जोरशोर से चलायेंगे।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही,
संरक्षक वेदप्रचार मण्डल हिसार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।